जनपथ

समय-चेतना का साहित्यिक आयोजन
अप्रैल-जून 2022 मूल्य ₹ 30

महत्वपूर्ण आलोचक अरुण होता पर विशेष

सुलोचना दास
संप्रति : विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग
संपर्क : परिमल मित्र स्मृति महाविद्यालय, मालबाजार, जलपाईगुड़ी-735221
संपर्क : 9749391715
ईमेल : sulosulochana97@gmail.com

आलोचना का मानुष-मर्म - अरुण होता

सुलोचना कुमारी दास

"जीवन में साहित्य की एवं साहित्य में जीवन की सुंदर प्रतिच्छवि है। जीवन-प्रसूत साहित्य ही जीवन को प्रभावित करने में समर्थ होता है।" यह कहना है अखिल भारतीय आचार्य रामचंद्र शुक्ल आलोचना पुरस्कार (2010), प्रथम गोपाल राय स्मृति समीक्षा सम्मान (2017), और लमही सम्मान (2018) से सम्मानित हमारे समय के वरिष्ठ आलोचक प्रो. अरुण होता का। उनकी आलोचकीय दृष्टि रचना के उस मर्म को टटोलती है, जो मशीनीकरण की संस्कृति में प्रवहमान सभ्यता को बचाने का कर्म करती है। दरअसल वर्तमान समय में मनुष्यता के छीजते मूल्यों और मानदंडों को रेखांकित करना एवं उसे बचा लेने की लालसा उन्हें आलोचना कर्म के लिए प्रेरित करती है। आलोचक की दृष्टि में केवल लिखना ही काम्य नहीं है, वरन् उस पर लिखना अभीष्ट है जो मनुष्यता को बचाने के लिए आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य भी है। सहृदय आलोचक अरुण होता की सबसे बड़ी चिंता भूमंडलीकरण, बाजारवाद और उपभोक्तावाद की दुष्त्रयी से प्रभावित जीवन-शैली, क्षरित होती संस्कृति, विगलित मूल्य, संवेदनहीनता, संबंधहीनता और दम तोड़ती मानवता है। आलोचक के शब्दों में "आज के भारत का सबसे चिंतनीय प्रश्न है- संवेदनाओं का क्षरण।"

दरअसल एक आलोचक की असली पहचान उसकी लेखनी है। हिंदी आलोचना का वर्तमान परिदृश्य जहां विमर्शों के गलियारे में भटककर अपनी इयत्ता को खोता जा रहा है, वहां अरुण होता की आलोचकीय दृष्टि हिंदी आलोचना को एक नई दिशा दे रही है। आज साहित्याकाश में स्त्री-विमर्श, दलित-विमर्श, आदिवासी-विमर्श, पर्यावरण-विमर्श जैसे तमाम विमर्शों के बादल उमड़-घुमड़ रहे हैं। ऐसे में आलोचना का स्वच्छ आकाश भी धूमिल-सा हो गया है। वर्तमान आलोचना का एक बड़ा हिस्सा विमर्श-केंद्रित और कथा-कहानियों पर आधृत है। कविता को भावात्मक विषय मानकर उपेक्षित कर दिया गया। प्लेटो ने कहा था कि कविता हृदय को, भावों को उद्वेलित करती है। इसलिए त्याज्य है। कविता का संबंध मस्तिष्क से नहीं हृदय से है, विचार से नहीं भाव से है। ध्यान दिया जाना चाहिए कि मस्तिष्क और विचार लीक के अनुयायी होते हैं। जबकि हृदय और भाव उन्मुक्त। विचार जब रूढ़ हो जाता है तब वह वाद का रूप ले लेता है। वाद यानी बंधन। इसके विपरीत, हृदय को बंधन स्वीकार्य नहीं है। इसी कारण भावों की प्रहेलिका कविता भी एक विषय, भाव या विचार तक केंद्रित नहीं होती है। भूत, वर्तमान और भविष्य उसके तीन ज्ञान-चक्षु हैं। वह सांस्कृतिक दायों- दया, प्रेम, करुणा, सौहार्द, सद्भाव, बंधुत्व, मानवता आदि की वाहिका होती है। अपने समय और समाज की तमाम अनुगूंजों से वह आलोड़ित रहती है। ऐसे में काव्यालोचन

बखार

पहली हराई

5. विनाश का न्योता मत दीजिए : अनन्त कुमार सिंह

स्मृति शेष

7. मन्नू भंडारी: मेरी इन आँखियों में : डॉ० हरेराम सिंह

अकाल में सारस : अरुण होता

10. आलोचना का मानुष-मर्म - अरुण होता : सुलोचना कुमारी दास
25. अरुण होता की आलोचकीय प्रतिभा : डॉ० स्नेहा सिंह
33. भूमंडलीकरण, बाजार और समकालीन कहानी : जगन्नाथ दुबे

बातचीत

36. दरअसल भूमंडलीकरण 'भूमंडीकरण' में तब्दील हो गया है
    सुपरिचित आलोचक अरुण होता से रीता दास की बातचीत

कथांगन

40. बाँस : संजय सिंह
45. बोल मेरी मछली... : जयन्त
49. प्रत्याशा : पवन चौहान
55. प्रेम की जीत : श्यामल बिहारी महतो

संस्मरण

58. हम हिन्दी के लेखक हैं : राजकुमार राकेश
67. यायावर : शैलेन्द्र चौहान

काव्यांगन

72. शंकरानंद
76. मीता दास
79. चन्द्र
86. शेषनाथ पाण्डेय